मुखपृष्ठ

साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 55, फरवरी(द्वितीय) , 2019

आशाओं से भरा आकाश

डॉ. मंजुला चौहान

संसार में बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनमें हर एक को याद रखना नामुमकिन है। बचपन की बातें, जो मरते दम तक नहीं भूल सकते। दुख-दर्द का दूर दूर तक कोई नामो निशान नहीं था। कभी भी किसी भी चीज़ के लिए हमने लड़ा हो या जिद् की हो। मुझे तो याद भी नहीं। नाना-नानी, पापा-ममा और मेरा प्यारा छोटा भाई आकाश। उधम खोर। घर को हमेशा सिर पर उठाये घूमता है। माँ हमेशा उसकी साइड पे खड़ी दिखती है, पापा मेरे। वैसे मेरा नाम सोनाली है पर पापा मुझे हमेशा सोनु के नाम से पुकारते हैं। नाना और नानी भी। अभी स्कूल जा रही हूँ। आठवीं में पढ़ रही हूँ। मेरा भाई पाँचवीं क्लास में है। पर मेरा भाई मुझसे ज्यादा इंटलिजेंट है। ये कहते थोडा अच्छा तो नहीं लग रहा पर भाई भी तो मेरा ही है। इंटलिजंट है तो है। 'चलो अब मुझे तैय्यार भी होना है। घर में नानी ही हम सब के डब्बे तैय्यार करती है। तभी नानी,

'ले बेटा, तेरा डब्बा'।

'आज क्या स्पेशल है नानी'

'रोज ही तो स्पेशल ही होता है। तेरी माँ उठकर सब के पसन्द का नाश्ता, खाना तैय्यार करती है।'

'ठीक है, वैसे ममा कहाँ है?'

'बाहर सब्जी वाला आया है। सबजी ले रही है।'

'ठीक है, मैं बाहर ही मिल लूँगी बॉय नानी'

'रुक सोनु, मेरी बात याद है ना?'

'हाँ नानी, किसी से ज्यादा बातें नहीं करना, कोई भी बुलाये तो नहीं जाना, किसी का दिया नहीं खाना, अकेले अकेले नहीं घूमना, खासकर बाथरूम जाना हो तो किसी सहेली को साथ ले जाना, सब ठीक याद है ना'

नानी मुस्कुराती 'अच्छा अब जा' सोनु को जाते देखती है। गीता सब्जी ले रही थी। तभी सोनु पीछे से आ उसे पकड़कर 'ममा मैं चलती हूँ'

'तैय्यार हो गई तू'

‘हाँ कब की’

‘अच्छा ध्यान से जा’

‘ओके बॉय’

गीता बड़ी दुविधा में थी। घर में आई तो सोचती सोफे पर बैठ गई। गीता की माँ पास आकर पूछती है। ’क्या हुआ?’

‘माँ शाम को सोनु लौटने तक मेरी जान जान नहीं होती’

‘हाँ मेरी भी पर क्या करे, हमेशा घर में कैसे बिठा के रखें और साथ भी कैसे घूमें?’ निर्भया का हत्या कांड टी.वी. पे बार बार आ रहा था। गीता और नानी उसी वजह से सोनु को लेकर परेशान थे। घर में हर किसी को सिर्फ मेरी ही चिंता थी। पर मैं हमेशा हर वक्त बड़ी होशियारी से रहने लगी।

दसवीं पास हुई तो कॉलेज में दाकिला लिया। बाप रे, वो कॉलेज का पहला दिन। मैं बड़ी डरी डरी सहमी डहमी कोने में खडी सभी को बारी बारी देखे जा रही थी। तभी दो लड़कियाँ मेरे सांने से गुजरीं, मैं आगे बड़ उनका नाम पूछा तो पता चला उनका नाम संगीता और बीना। मैंने भी अपना नाम बताया, सोनाली। तीनों में पक्की वाली दोस्ती न सही पर परिचय जरूर हुआ। क्लास ढूँढ़ते आगे बढ़े। हिस्टरी के क्लास मेंजा बैठे। कॉलेज का समय खतम हुआ उन दोनों से विदा ले कर बस स्टॉप के लिए निकली। बस स्टॉप पर खड़ी बस का इंतजार करने लगी। तभी एक लड़की दिखाई दी, जो दिखने में थोडी पागल सी लग रही थी। वहीं पर बैठे चार लड़के उसे आवाज दे कर बुला रहे थे और वह शरमाये जा रही थी। मुझे उन्हें देखकर गुस्सा हो आ रहा था। पर चुप चाफ खड़ी रही। लड़के उसे माधुरी दीक्षित कह कर पुकार रहे थे। नाचने को कह रहे थे। गाने को कह रहे थे। वो लड़की भी गाना गा रही थी और नाच भी रही थी। उसी समय मेरी बस आ गई। मैं बस में चड़ गई। पर खिड़की से उस लड़की को देखती रही। घर आने के बाद मन थोडा उदास था। पर नानी और ममा को देखने के बाद सारी थकान दूर हो जाती है। खाना खा के बैठ गये। नानी ने पूछा।

‘कॉलेज का पहला दिन कैसा था?’

‘हाँ, अच्छा था’

‘सिर्फ अच्छा?’

‘नानी कॉलेज से ज्यादा हमारा स्कूल अच्छा था।’

‘अच्छा चल कल तेर बाप से कह दूँगी वापिस स्कूल में भर्ती करा दें’

‘क्या नानी’

‘और नहीं तो क्या स्कूल अच्छा था। बेटा आगे की सोच, पीछे जितना भी अच्छा हो उसे लाँघकर आगे जाना ही पड़ता है समझी।’

‘मै तो ऐसे ही कह रही थी नानी।’

‘ठीक है जा पढ़ाई कर’ नानी घर से बाहर जाती है। पड़ोस में उनकी दोस्त मीनाक्षी जी रहती है। अब घंटों उनके साथ गप्पे लड़ायेगी।

सोनु का मन पढ़ाई में नहीं लग रहा था। बार बार उस पागल लड़की का चेहरा सामने आ रहा था। थोडी देर पढ़ने की कोशिश की, किताबें रख भाई के पास आई। आकाश कुछ लिख रहा था। सोनाली आकर पूछती है, ’क्या लिख रहे हो?

‘होम वर्क’

‘हाँ होम वर्क है, पर होम वर्क में क्या है?’

‘दीदी अपना का करो ना, क्यों मेरे पीछे पड़ी रहती हो।’

‘अरे वा, तू तो बहुत बड़ा हो गया है। क्यों बहुत दिन से मार पड़ी नहीं तो सब भूल गया? दीदी हूँ मैं तेरी। चल चुप चाप दिखा दे क्या लिख रहा है।’

थोडा मुँह फूला कर ’ले देख ले’ किताब खिसका देता है।

‘ये क्या कितनी गलतियाँ हैं। ये है तेरा लिखना।’ ममा को आवाज़ देती है।

‘ममा को क्यों बुला रही है?’

‘क्यों अब लगा जोर का झटका धीरे से। बड़ी बातें कर रहा था ना अभी।’

‘माफ कर दे ना दीदी प्लीज़।’

‘ठीक है लिख बिना एक भी गलती किये’ ममा अंदर आई और पूछा,

‘क्या बात है क्यों पुकारा’

‘कुछ नहीं यूंही आओ बैठो ना।’

‘क्या सोनु काम है’ कहकर चली गई। सोनु भी अपनी किताब ले कर बैठ गई।

कॉलेज के दो साल बीत गये। सोनु पढ़ाई में घुस गई। एक्सट्रा क्लास, ट्यूशन ऐसे वह व्यस्त हो गई। बीच में एक बार उस पगली माधुरी दीक्षीत से मुलाकात हुई। तब भी वह पांच छः लड़कों से घिरी थी और उनके सामने नाच रही थी। पर आज थोडी सी मिटी लग रही थी। उस माहोल को देखते रहना अच्छा नहीं लगता था। तो मैंने नज़रें फेर लीं। तभी वह लड़की यानी पगली माधुरी भागती मेरे सामने आ खड़ी हो गई। दिल मानो एक दम से धक्का खा कर रुक गया हो, आज पहली बार उसे इतने नजदीक से देखा। डर

के मैं पीछे सरकने लगी। दूर खड़े वे सब लड़के तालियाँ मार मार हँस रहे थे। पगली फिर उनके पास भागती चली गई और तालियाँ पीट-पीट 'डर गई, डर गई' कहने लगी। एक पल के लिए मेरा चेहरा पीला पड़ गया था। गुस्सा भी आया। पर कुछ कहने से फायदा नहीं सोच कर पसीना पोंछने लगी। तभी मेरी बस आई, मैं उसमें चढ़कर चली गई। घर पहुँच सारा किस्सा नानाई को बताया तो नानी गुस्से से 'ये सब शायद उन लड़कों की करतूत है। कल से तेरे साथ कॉलेज आऊँगी और उन सब को मजा चखाऊँगी।'

दूसरे दिन सचमुच नानी तैय्यार भी हो गई। पर मैंने उन्हें समझा बुझा कर रोक दिया। मैं कॉलेज चली गई। रोज इसी तरह के कुछ-न-कुछ छोटी-छोटी घटनाएँ घटती रही। एक दिन पगली सचमुच गायब हो गई। मैं रोज उसे ढूँढ़ती पर वह कहीं नहीं दिखाई दी। कॉलेज में इमतिहान शुरु हो गये तो उसकी याद बिलकुल नहीं आई। परीक्षा के बाद भी दोस्तों के साथ घूमना घरवालों के साथ हँसते खेलते दिन बीतने लगे।

करीब आठ महीनें बीतने के बाद सोनाली को पगली फिर दिखाई दी। आज वह मेडिकल की स्टुडेंट थी। पगली को देखा तो पुरानी यादें थोडी ताजी हुई। पगली का पेट निकला हुआ था। शायद पेट से थी। लगा किसने इसके साथ शादी की होगी? वह उसके आगे-पीछे उस इनसान को ढूँढ़ने लगी। पर वहाँ पगली के अलावा कोई नहीं था। धीरे-धीरे पगली आँखों से दूर हो गई। मैं देर तक देखती रही फिर अपने क्लास के लिए निकल गई।

घर आई तो दिमाग में पगली का ही चित्र था। मैंने ना तो उसे कभी कुछ खाने को दिया, पीने को दिया या पैसे दिये। पर हमेशा जब भी वो सामने आती है, कई दिनों तक दिमाग से जाती नहीं थी। सोच ही रही थी नानी पास आ पूछती है।

'इतना क्या सोच रही है, सोनु?'

'नानी आप को याद है कुछ महीने पहले बस स्टॉप पर एक पगली ने मुझे डराया था।'

'हाँ फिर डराया क्या उसने?'

'नहीं, नहीं आज मैंने उसे देखा तो.....'

'तो क्या?'

'वह पेट से थी'

'हाँ, होगी उसमें क्या?'

'ऐसी पागल से किसनी शादी की होगी?'

सोनाली की बात सुन नानी उसका माथा सहलाते हुए 'कहाँ बच्चा ठीक ठाक होने के बावजूद सौ नुक्स निकालते हैं। क्या पता शादी हुई है या....?'

सोनाली नानी को थोड़ी देर देखती रही।

सभी क्लास खतम हुए। सोनाली और उसके दोस्त मिलकर कैंटिन गये। 'बड़ी जोरों की भूख लगी है कुछ मंगावो।' कहती सोनाली मूँह धोने के लिए बाथरूम की ओर चली गई। फेस वाश से मुँह धो बाहर निकली तो देखा उसके दोस्तों के पास वह पगली खड़ी थी। और सभी उसका मज़ाक उड़ा रहे थे। एक पल के लिए अपने गुस्से को काबू में कर टेबल के पास चलती है। सभी को बारी बारी देखती है। और कहती है 'ये क्या हो रहा है?'

'अरे सोनाली तुम्हें पता है ये माधुरी है।' माधुरी ये सोनाली है।' इतना कह सभी जोर जोर से हँसने लगे। पगली कूद-कूद तालियाँ बजाती हँसने लगी। सोनाली ने देखा उसका पेट हिल रहा था। एक दम से पगली का हाथ पकड उसे डाँटती है 'चुप-चाप खड़ी रहो, और तुम लोग ये क्या कर रहे हो? वो तो पागल है, तुम लोग भी पागल हो क्या? उसकी हालत देखो'

'अरे हम ने थोडे ही उसे बुलाया। वो खुद यहाँ आई है।'

'आई हो तो? उसका मज़ाक बनाना जरूरी है, कुछ खाने को देकर भेज देते।'

सोनाली गुस्से से वहाँ से चली गई पर जाते जाते दो ब्रेड और चाय उस पगली को देने के लिए बोल गई।

बाद में सभी दोस्त उसके पास जा कर मॉफी माँगते हैं।

पगली के नौ महीने पूरे हो गये। बड़े दर्द में वह घूमने लगी। दिन में दो तीन बार तो सोनाली की नज़र उस पर पढ़ ही जाती थी। एक रात उसकी नाइट ड्यूटी थी। रात के करीब ११ बजे सोनाली चाय पीने टी स्टॉल पर गई। वहाँ से बाहर का रास्ता साफ साफ दिखाई देता है। चाय पीते पीते उसकी नजर एक स्ट्रीट लाइट पर गई। स्ट्रीट लाईट के नीचे कुछ दिखाई दे रहा था। बहुत दूर होने के कारण कुछ साफ साफ दिख नहीं रहा था। वहाँ कोई पड़ा पड़ा तडप रहा है। ऐसे लग रहा था। चाय खतम कर वार्ड बॉय को लेकर वहाँ चली गई। तो देखा वह तो पगली थी। जो दर्द के मारे तड़प रही थी। सोनाली उसका हाथ पकडकर पल्स चेक किया। वार्ड बॉय से कहा 'एम्बुलेन्स ले आओ। जल्दी जाओ।' वार्ड बॉय भागता गया कुछ ही मिटन में एम्बुलेन्स ले कर आया। पगली को उठा कर अंदर सुलाया गया। सोनाली इधर-उधर देखती है। कोई नहीं दिखाई दिया। वह भी एम्बुलेन्स में चढ़कर बैठ गई।

अस्पताल में लाने के बाद डॉक्टरों ने थोडी आना-कानी करी। पर फिर मान गये। सोनाली पगली को ऑपरेशन थेटर में ले गई। एक बड़े डॉक्टर वहाँ आये। उसका पूरा चेकप किया। फिर सोनाली से कहा, दोनों का बचना मुश्किल है। सोनाली की आँखों से आँसु टपक पड़े। डॉक्टर ने उसे दिलासा दिया। मैं कोशिश

करूँगा, पर तुम इतनी इमोशनल हो मुझे पता नहीं था। हम डॉक्टर्स् को इतना इमोशनल होने की इजाजत नहीं है, बी स्ट्राँग, ओके।'

'ओके सर।' सोनाली का मन भारी था। उसने घर फोन किया उसकी रूआँसी आवाज़ से माँ और नानी पूछते हैं तो सोनाली सारी बात बताती है। नानी फोन लेकर उसे समझाती है।

'देख, बेटा जितना तुझसे हो सके उतनी कोशिश कर। आगे भगवान की मर्जी। और तुझे तो मैंने हमेशा समझाया है ना। सहनशक्ति एवं धैर्य औरत के लिए बहुत जरूरी है। आज तुझे धैर्य से काम लेना पड़ेगा।'

'जी नानी।' कह कर अपनी आँखें पोंछ परिस्थिति का सामना करने को तैय्यार होती है। डॉक्टरों के बड़े कोशिश के बाद पगली बच जाती है। पर बच्चे को बचाया नहीं जा सका। हफ्ते भर बाद पगली को अस्पताल से सीधा मेंटल हॉस्पिटल शिफ्ट कर दिया गया।

चलो पगली के साथ कुछ तो अच्छा हुआ। सोनाली अब तसल्ली की साँस लेती है।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें